वी॰सी॰डी॰नं॰560 ऑडियो कैसेट नं॰1046

नेल्लूर (आन्ध्र प्रदेश) मु॰31॰05॰67 ता॰25॰11॰06

ज्ञानगर्भ रूपी भट्ठी में ही सत्य बाप की पहचान

ओम शान्ति, 31 मई 1967 का प्रातःक्लास चल रहा था। तीसरे पेज के मध्य में बात चल रही थी– कोई बिरले हैं जो सात रोज़ का कोर्स उठाते हैं और ये साप्ताहिक पाठ जो करते हैं, गीता पाठ करते हैं, रामायण पाठ करते हैं, ये सात रोज़ की बात भी अभी की है। सात दिन आपको भट्ठी में चढ़ना पड़े और अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने पर सारा किचड़ा निकल जावेगा– इसको भट्ठी कहते हैं। जैसे भट्ठी में सोना गलाया जाता है तो सारी खाद निकल जाती है। आधाकल्प की गंदी बीमारी है देह–अभिमान की। वो गंदी बीमारी निकालने के लिए सात रोज़ भट्ठी में बैठाया जाता है। देही–अभिमानी बनना पड़े, अपन को आत्मा समझना पड़े। सात रोज़ का कोर्स उठाने वाले बहुत थोड़े हैं। ज्ञान का बाण तो कोई को सेकेण्ड में भी लग सकता है। देरी से आने वाले भी आगे जा सकते हैं। लास्ट में आने वाले भी फास्ट जा सकते हैं और गए भी हैं। वो कहेंगे कि हम रेस करके बाबा से पूरा वर्सा लेंगे और कोई तो पुरानों से तीखे चले भी जाते हैं; क्योंकि उनको अच्छे–2 प्वॉइंट्स तैयार माल मिलता है। प्रदर्शनी आदि पर समझाने में कितना समय जाया जाता है। सहज तो होता ही है। खुद नहीं समझाए सको तो कोई दूसरी बहन को बुलाओ, रोज़ आ करके कथा करके जावे। 5000 वर्ष पहले इन लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। शास्त्रों में भी लिखा हुआ है– सतयुग में लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। वो लक्ष्मी–नारायण 16 कला सम्पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उनके राज्य में सब सुखी थे; दुःख का नाम–निशान नहीं था। ये लक्ष्मी–नारायण का राज्य किसने स्थापन किया? उन नारायण को नर नारायण किसने बनाया? नर, मनुष्य को कहा जाता है। गीता में तो लिखा हुआ है कि हे अर्जुन, तु ऐसी करनी करे, जो नर से नारायण बने और हे द्रौपदी, तू ऐसी करनी कर, जो नारी से नारायणी बने। ये ज्ञान गीता में दिया हुआ है। भगवद् गीता गायी हुई है। भगवान ही नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी जैसा देवता बनाए सकता है। मनुष्यों की पढ़ाइयाँ तो वकील बनावेंगी, डॉक्टर बनावेंगी, इंजीनियर बनावेंगी; मनुष्य से देवता कोई नहीं बनाय सकता। मनुष्य ऊँचा उठता है तो देवता बनता है और मनुष्य नीचे गिरता है तो राक्षस बन जाता है। भगवान आ करके गिरे हुओं को ऊँचा उठाता है। सतयुग में होते हैं देवतायें और कलियुग में होते हैं राक्षस। कलियुग को पतित दुनियाँ कहा जाता है, सतयुग को पावन दुनियाँ कहा जाता है। ये पतित दुनियाँ से पावन दुनियाँ बनाने वाला कौन? पतितों को पावन कौन बनायेगा? सिवाए भगवान के कोई नहीं बनाए सकता; परंतु भगवान कौन है? सर्वव्यापी कह कर रोला डाल दिया है। भगवान सर्वव्यापी नहीं है, वो तो इस सृष्टि पर एकव्यापी हो करके आता है और जिस एक मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है, पहले उसी को अपने संग के रंग से पतित से पावन बनाता है। फिर नम्बरवार और आत्माएँ पतित से पावन बनती हैं। उन लक्ष्मी–नारायण का राज्य साढ़े बारह सौ वर्ष चलता है। फिर त्रेता शुरू होता है तो रामराज्य शुरू हो जाता है, वो भी साढ़े बारह सौ वर्ष। इस तरह भगवान का स्थापन किया हुआ राज्य ढाई हज़ार साल चलता है, वो स्वर्ग का राज्य है। नरक को स्वर्ग बनाना भगवान का काम है। फिर जैसे दिन, दिन के बाद रात होती है, ऐसे ही स्वर्ग बदल करके नरक बनता है। एकदम नरक नहीं बन जाता है, धीरे–2 मनुष्य की कलायें कम होती हैं। सुख भोगने से आत्मा की पावर कम होती जाती। आत्मा जैसे कि एक बैटरी है, जो भृकुटि के मध्य में रखी हुई है, एक सितारे के मिसल। इतनी छोटी–सी बैटरी में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। ज्यों–2 सुख भोगते जाते हैं त्यों–2 आत्मिक स्थिति कम होती जाती है। देहभान आने से दुःख बढ़ता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बढ़ता है। अगर अपन को आत्मा ही समझें, पक्की प्रैक्टिस करें, तो काम विकार भी तंग नहीं कर सकता। अपन को देह समझते हैं तो देहभान आने के कारण काम विकार आता है। देह समझने से क्रोध आता है, लोभ आता है, मोह आता है, अहंकार आता है। अगर अपन को आत्मा समझें, दूसरों को भी ज्योतिबिंदु आत्मा के रूप में देखें, तो पाँचों विकारों की प्रवेशता नहीं हो सकती। ये प्रैक्टिस अभी परमात्मा बाप आ करके कराते हैं। कोई मनुष्य मात्र नहीं जानता कि हम आत्मा ज्योतिबिंदु हैं। सिर्फ शास्त्रों में लिख दिया है **"अणोः अणीयांसम्"** (गीता 8/9), आत्मा अणु रूप है; लेकिन फिर कह देते हैं कि मन जड़ है। अरे, मन–बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। मनुष्य मरता है तो ये थोड़े ही कहा जाता है कि उसमें मन–बुद्धि रह गई। मन–बुद्धि की पावर निकल गई माना आत्मा निकल गई। ये मन–बुद्धि की पावर में अनेक जन्मों के संस्कार भरे हुए हैं। तो मन, बुद्धि और संस्कार– ये तीनों शक्तियों का जो समुच्चय है, वो ही आत्मा है। ये आत्मा शरीर से अलग चीज़ है। मृत्यु होती है तो शरीर अलग हो जाता है, आत्मा अलग हो जाती है। शरीर में से क्या निकल गया? हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान– सब तो मौजूद रहते हैं, फिर वो चलायमान क्यों नहीं होते? जैसे मोटर होती है, उसमें से बैटरी निकाल दी जाए, तो मोटर चलना बंद हो जाती है। ऐसे ही ये शरीर रूपी मोटर है, जिसमें आत्मा रूपी बैटरी है। वो आत्मा रूपी बैटरी अविनाशी है, अनादि है, सिर्फ उसकी शक्ति कम होती है। जब उसकी पावर उझयानी हो जाती है, रोशनी कम हो जाती

है, तो परमपिता परमात्मा शिव (आत्मा) रूपी बैटरी को आ करके चार्ज करता है और एक बैटरी को चार्ज नहीं करता है; नम्बरवार सब मनुष्य मात्र की बैटरी चार्ज करके जाता है। चार्ज कैसे होती है? याद की स्मृति रूपी डोरी लगाने से आत्मा चार्ज होती है, और याद कब आती है? याद उसी की आती है जिसको आँखों से देखा जाता है, कानों से सुना जाता है, इन्द्रियों से अनुभव किया जाता है। देखी हुई चीज़ याद ज़रूर आती है। तो भगवान भी इस सृष्टि पर आ करके, कोई मनुष्य तन में प्रवेश करके, दृष्टि से सृष्टि सुधारता है। ऐसे नहीं, और इन्द्रियों का संग का रंग नहीं होता। वो भी पूर्वजन्मों के कर्मों के हिसाब से होता है। इसलिए कहा जाता है– बनी बनायी बन रही, अब कछु बननी नाय। जिनका पूर्वजन्मों का जैसा–2 हिसाब–किताब है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर हीरो–हीरोइन जैसा पार्ट बजाने वालीं आत्माओं के साथ, वैसा–2 याद की तीक्ष्णता वो आत्माएँ पकड़ती हैं। कोई की तीखी याद होती है, कोई की मध्यम याद होती है, कोई की धीमी याद होती है, कोई को बहुत परिश्रम करने पर भी याद नहीं आती। इसका कारण क्या है? इसका कारण यही है कि भगवान बाप शिव जब इस सृष्टि पर आते हैं और इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर हीरो–हीरोइन का पार्ट बजाने वाली राम–कृष्ण वाली आत्माओं के द्वारा काम कराते हैं, मात–पिता का पार्ट बजाते हैं, कोई आत्माएँ कम कनेक्शन में आती हैं, कोई आत्माएँ ज़्यादा कनेक्शन में आती हैं। जो ज़्यादा कनेक्शन में आती हैं उनको ऑटोमैटिक ज़ास्ती याद आती है, कम कनेक्शन में आने वालीं उनको कम याद आती है। अनादि–अविनाशी हिसाब–किताब बना हुआ है। इसलिए कहा जाता है आत्मा अविनाशी है और उसमें पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ है। हर आत्मा में जैसे कि अनेक जन्मों के संस्कार समाये हुए हैं। जैसे कोई रिकॉर्ड होता है। पुराने जमाने में तवे के मिसल रिकॉर्ड होते थे, ग्रामोफोन पर रख करके बजाये जाते थे। समय की सूई जैसे–2 घुमती जाती है वैसे–2 रिकॉर्ड बजता जाता है। तो ये सृष्टि रूपी ड्रामा है, 5000 वर्ष का ड्रामा है। उस ड्रामा में जैसे–2 समय की सूई घुमती जाती है, आत्मा अनेक जन्मों में अपना–2 पार्ट बजाती जाती है। ढाई हज़ार साल तक आत्माएँ सुख का पार्ट बजाती हैं और उसके बाद ढाई हज़ार साल तक आत्माएँ नम्बरवार दुःख ग्रहण करने का पार्ट बजाती हैं। सुख की सृष्टि को दिन कहा जाता है और द्वापर–कलियुगी सृष्टि को रात कहा जाता है, जहाँ सब अज्ञान अंधकार में भटकते हैं, अपने को देह समझते हैं। देह रूपी मिट्टी समझने के कारण आत्मा देह–अभिमान में डूबती चली जाती है। सतयुग–त्रेता में देवताओं को अपनी आत्मा की स्मृति रहती है, द्वापर शुरू होता है तो आत्मिक विस्मृति हो जाती है। विस्मृति क्यों हो जाती है? क्योंकि द्वैतवादी युग द्वापर शुरू होता है। सतयुग–त्रेता है अद्वैत युग। वहाँ दो नहीं होते, एक राजा होता है, एक राज्य होता है, एक धर्म होता है, एक कुल होता है, एक वंश होता है, एक भाषा होती है सारी दुनियाँ में; इसलिए सुख ही सुख होता है। उसको कहते हैं– अद्वैत राज्य। फिर समय पलटा खाता है। ढाई हज़ार वर्ष के बाद द्वापर शुरू होता है। ये द्वैत फैलाने वाला कौन? द्वैतवादी दुनियाँ बनाने का निमित्त कौन बनता है? राम आते हैं तो अद्वैतवादी दुनियाँ बनाते हैं, सतयुग–त्रेता की देवताई दुनियाँ का सृजन करते हैं और रावण आते हैं तो द्वैतवादी दुनियाँ बनाते हैं। अब ये रावण कौन? सतयुग–त्रेता में एक ही धर्म था, द्वापर–कलियुग में अनेक धर्म होते हैं। तो एकता में सुख होगा या अनेकता में सुख होगा? एकता में सुख होता है, अनेकता में दुःख होता है। द्वापरयुग से इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरूनानक आ करके अलग–2 धर्म स्थापन करते हैं, अलग–2 मतें बन जाती हैं, अलग–2 कुल बन जाते हैं, अलग–2 राज्य बन जाते हैं और सब आपस में टकराते हैं। उनके टकराने से कलह–क्लेशयुगी दुनियाँ कलियुग का निर्माण हो जाता है, सब दुःखी हो जाते हैं। **''तुंडे–2 मतिर्भिन्ना''**, एक ही परिवार में माँ की मत बाप से नहीं मिलती, बाप की मत बच्चे से नहीं मिलती, बच्चों की मत बच्चियों से नहीं मिलती। परिवार–2 में विघटन होता है। अब ऐसी विघटित हुई दुनियाँ को जोड़ने वाला कौन है? ढाई हज़ार वर्ष की हिस्ट्री मनुष्यों के पास मौजूद है। दुनियाँ विघटित होती आई है; जुड़ने का नाम–निशान नहीं। दिल टूटते चले जाते हैं; जुड़ने का नाम नहीं। आखरीन इन दिलों को जोड़ने वाला कौन? वो दिलावर बाप है, सब बिंदु–2 आत्माओं का बाप। वो जन्म–मरण के चक्र से न्यारा है, उसकी बिंदी का ही नाम शिव है। शिव का लिंग बनाया जाता है। लिंग को हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान नहीं दिखाए जाते; क्योंकि वो सदैव ज्योतिबिंदु स्वरूप है। जब उसको हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान हैं ही नहीं, फिर वो सृष्टि का कल्याण कैसे करता है? गीता में एक शब्द भी आया है **''प्रवेष्टुम्''(11/54)**, मैं प्रवेश करता हूँ, प्रवेश करने योग्य हूँ। जैसे भूत–प्रेत आत्माएँ प्रवेश करती हैं। वो तो भूत–प्रेत हैं; ये तो भगवान है, ये भी प्रवेश कर सकता है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच की मनुष्यात्माओं में से जो भी पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, उन हीरो–हीरोइन का पार्ट बजाने वालीं राम–कृष्ण की आत्माओं में प्रवेश करके एक का नाम देता है– ब्रह्मा। ब्रह्मं माना बड़ी, मा माना माँ। भगवान इस सृष्टि रूपी रंगमंच की माता का पार्ट बजाता है, सबको प्यार ही प्यार देता है। कोई बच्चा ये अनुभव नहीं करता कि माँ ने हमें कभी टेढ़ी नज़र से देखा, कोई कह नहीं सकता। आज देश–2 में, शहर–2 में, गाँव–2 में जो ब्रह्माकुमारी विद्यालय फैले हुए हैं, ये इस बात का प्रूफ है कि भगवान बाप ब्रह्मा के तन में आ करके माँ के रूप में पालना करता है, माँ के रूप में प्यार देता है, बच्चों को ज्ञान का दूध पिलाता है। बच्चे तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही होते हैं। कोई बच्चे ज़हीन (बुद्धिमान) होते हैं तो पढ़–लिख करके ऊँचा पद पाते हैं, कोई डल बुद्धि होते हैं। कोई भगवान की बेसिक नॉलेज पढ़ करके ही रह जाते हैं और कोई भगवान की पढ़ायी हुई ऊँची पढ़ाई भी पढ़ते हैं। जो ऊँची से ऊँची पढ़ाई पढ़ते हैं वो नर से डायरेक्ट नारायण इसी जन्म में बन जाते हैं। भगवान आ करके कोई अंधश्रद्धा नहीं सिखाता। जैसे गुरू लोग कहते हैं– यहाँ पुरुषार्थ करते रहो, अगले किसी जन्म में पुरुषार्थ करते–2 मनुष्य से देवता बन जावेंगे। ऐसी अंधश्रद्धा की यहाँ कोई बात नहीं है। जैसे स्कूल–कॉलेज़ीस होते हैं तो ये

थोड़े ही कहा जाता है कि यहाँ पढ़ाई पढ़ो, अगले जन्म में डॉक्टर बन जाना; यहाँ पढ़ाई पढ़ना, अगले जन्म में इंजीनियर बन जाना। फिर कौन पढ़ाई पढ़ेगा? किसी को विश्वास ही नहीं होता। कोई पुरुषार्थ ही नहीं करेगा। यहाँ तो भगवान बाप कहते हैं कि बच्चे, मैं जो तुम्हें रास्ता बताता हूँ, अगर उस रास्ते पर तुम चलेंगे, कर्म–अकर्म और विकर्म की गति को सीखेंगे, दूसरों को सिखावेंगे, अपना जीवन बनावेंगे, दूसरों का जीवन बनावेंगे, तो मैं गारंटी करता हूँ तुम इसी जन्म में नर से नारायण जैसे देवता और नारी से लक्ष्मी जैसी देवी बन जावेंगे। जो देवी–देवता बनेंगे उनकी दुनियाँ बरक़रार रहेगी और बाकी जो देवी–देवता बनने का पुरुषार्थ नहीं करेंगे उनको इस दुनियाँ में जो विनाश बरपा होना है, उसमें अपने शरीर को जबरियन छोड़ना पड़ेगा। उसके लिए ऐटम बम्ब बन चुके हैं। आज से 70 साल पहले ऐटम बम्बों का नामनिशान नहीं था; क्योंकि 70 साल पहले भगवान ही नहीं आया हुआ था। 70 साल के अंदर ही ये भयंकर ऐटमिक एनर्जी तैयार हो गई। इस ऐटमिक एनर्जी से सारी दुनियाँ का ध्वंस होगा। सबको अपने शरीर छोड़ने पड़ेंगे। कौन बचेंगे? वो बचेंगे जिन्होंने याद की युक्ति सीखी होगी। भगवान बाप की गहरी याद में ऐसी तल्लीनता हो जाए जो श्वास–प्रश्वास लेना भी भूल जाए। ऐटमिक विस्फोट उनको असर ही नहीं करेंगे, जो बदबू फैलेगी वो उनको प्रभावित नहीं करेगी। बाकी जिन्होंने उस योग की, राजयोग की प्रक्रिया को नहीं सीखा होगा, उनको तो जबरियन शरीर छोड़ना ही पड़ेगा। हाय–2 करके शरीर छोड़ेंगे और अंत मते सो अनेक जन्मों के लिए गति बन जावेगी। कोई अनेक जन्म दुःख भोगते हैं, कोई अनेक जन्म सुख भोगते हैं। जो अनेक जन्मों में ज़्यादा से ज़्यादा सुख भोगने वाली आत्माएँ हैं वो देवी–देवता सनातन धर्म की आत्माएँ कही जाती हैं और जो अनेक जन्मों में दुःख भोगने वाली आत्माएँ हैं वो कलियुग के अंत में आ करके राक्षसी जन्म लेती हैं, ऐटम बम्ब जैसी घातक चीज़ों का निर्माण करने में अपनी बुद्धि लगाती हैं। कोई तो बनाने वाले होते हैं, कोई बिगड़ाने वाले होते हैं। मकान को बनाने वालों को ज़्यादा पैसा मिलता है या मकान को तोड़ने वालों को ज़्यादा पैसा मिलता है? (किसी ने कहा– बनाने वाले) बनाने वालों को ज़्यादा पैसा मिलता है। भगवान बाप भी इस सृष्टि रूपी मकान का मालिक है। वो भी इस सृष्टि पर आता है तो फ्री छोड़ देता है– चाहे मकान बनाने का काम करो और चाहे बिगाड़ने का काम करो। बनाने का काम वो ही कर सकेंगे जो मेरी मत पर चलेंगे और बिगड़ाने का काम वो करेंगे जो मनुष्य की मतों पर चलेंगे। अनेक देहधारी मनुष्य गुरू हैं, उन मनुष्य गुरुओं की मत पर चलते–2 ढाई हज़ार साल (में) सारी दुनियाँ गड्ढे में चली गई, सब दुःखी हो गये। जो बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे हैं उनकी बुद्धि में बैठ जाना चाहिए कि मनुष्य गुरुओं से इस सृष्टि का पतन होता है और एक भगवान की श्रीमत से सारी सृष्टि का उत्थान होता है। भगवान आते हैं तो गति–सद्गति का रास्ता बताते हैं। हरेक मनुष्य आत्मा की नम्बरवार गति और सद्गति होती है। पहली गति होती है बुद्धि की। मन–बुद्धि रूपी आत्मा गतिशील बन जाती है। कैसे बनती है? देह समझने से मिट्टी याद आवेगी। अपने को देह के रूप में देखेंगे, संबंधियों को देह के रूप में देखेंगे तो मिट्टी को याद करने से बुद्धि मिट्टी बनती है और अपन को ज्योतिबिंदु आत्मा स्टार समझने से आत्मा चैतन्य बनेगी, रोशनी वाली बन जायेगी, सूक्ष्म बन जाएगी और सूक्ष्म आत्मा ज्ञान की गहराइयों में प्रवेश कर सकेगी। इसलिए बाप कहते हैं– पहले–2 सीढ़ी यह चढ़ो कि मैं यह देह नहीं हूँ, मिट्टी का पुतला नहीं हूँ; मैं ज्योतिबिंदु आत्मा हूँ, स्टार हूँ। वो स्टार (जो) आसमान में होते हैं वो जड़ सितारे हैं और तुम नम्बरवार धरती के चैतन्य सितारे हो। गायन है नौ लाख सितारों का, नौलखाहार का। ये नौ लाख सितारे वही आत्मा रूपी सितारे हैं जो कयामत के समय में सारी सृष्टि में ज्ञान की रोशनी फैलाते हैं। बाकी पाँच सौ करोड़ की, सात सौ करोड़ की जो भी मनुष्यों की दुनियाँ है, उनके सामने सब अज्ञानी हैं। उन पाँच सौ–सात सौ करोड़ों ने भगवान बाप को उतना नज़दीक से नहीं पहचाना। देह–अभिमान में रह करके, देह का अहंकार आने से भगवान बाप को नहीं पहचान सके और जो निरहंकारी बन करके भगवान बाप को पहचानते हैं वो नज़दीक होने के कारण ईश्वरीय शक्तियों को प्राप्त कर लेते हैं। उनको पहली शक्ति मिलती है– याद की शक्ति। मैं जो हूँ, जैसा हूँ और जिस रूप में पार्ट बजाए रहा हूँ, उस रूप को कोई बिरले ही समझते हैं; सब नहीं समझ सकते। जो समझते हैं, जानते हैं, पहचानते हैं, वो गहरी याद भी करते हैं। भगवान बाप तो सब आत्माओं से जास्ती सूक्ष्म है, अति सूक्ष्म है, बुद्धिमानों की बुद्धि कहा जाता है। वो जिस तन में प्रवेश करता है उसके द्वारा ज्ञान के सूक्ष्म ते सूक्ष्म राज़ समझाता है और वो ज्ञान सबकी समझ में आ सकता है। गरीब हो, रईस हो, शरीर से स्वस्थ हो, बीमार–धीमार हो, लूला, लँगड़ा, अंधा, कोड़ी हो, सब कोई भगवान के ज्ञान को समझ सकता है। कोई जाति का बंधन नहीं, कोई धर्म का बंधन नहीं, कोई देश का बंधन नहीं, कोई समाज का बंधन नहीं। कोई भी मनुष्य आत्मा भगवान के ज्ञान को सहज ही समझ सकती है। भगवान के लिए तो गायन ही है– मुश्किल को सहज करने वाला, तो उसका ज्ञान मुश्किल कैसे हो सकता है! अगर कोई प्रयास करे तो ज़रूर समझ सकता है। प्रयास ही नहीं करेगा, इच्छा ही नहीं करेगा तो समझने की बात ही नहीं। इसलिए भगवान जो ज्ञान देते हैं गीता में, उस गीता के ज्ञान को सहज ज्ञान और सहज राजयोग कहा जाता है। भगवान की याद तो बहुत सहज होनी चाहिए; क्योंकि भगवान ही सुखों का सागर है। जो सुखदाता कहा जाता है उसकी तो याद आनी चाहिए। रावण दुःखदाता है, उसको कोई याद नहीं करता। राम को याद करने की कोशिश करते हैं; लेकिन राम कौन है ये पहचानते नहीं हैं। पहचान करके याद करेंगे तो प्राप्ति जास्ती होगी। बिना पहचाने याद करेंगे तो प्राप्ति नहीं हो सकती; अप्राप्ति भी हो सकती है, वेस्टेज ऑफ टाइम, मनी और एनर्जी हो सकता है; क्योंकि अंधश्रद्धापूर्वक याद करते हैं। जिसने जो सुनाया उसी रास्ते पर चल पड़ते हैं; उसे अंधश्रद्धा कहा जाता है। भगवान आ करके कोई अंधश्रद्धा नहीं सिखाते। वो तो स्पष्ट बताते हैं– बच्चे, तुम आत्मा हो; तुम शरीर नहीं हो। शरीर

तो पाँच तत्वों का पुतला है, इसको मिट्टी का पुतला कहा जाता है। गर्भ में 4/5 महीने ये पुतला तैयार होता है। गर्भ–पिंड निर्जीव होता है, कोई हरकत नहीं करता। जब 4/5 महीने के बाद आत्मा प्रवेश करती है तो पेट में चुर्र–पुर्र होती है, माँ को भी पता चलता है। तो आत्मा अलग चीज़ और देह अलग चीज़। अभी ये वंडरफुल कुदरत है कि गर्भ में जो आत्मा प्रवेश करती है, उसका चोला 4–5 महीने पहले ही तैयार होने लगता है। 4/5 महीने पहले वो आत्मा कहीं दूसरी जगह जीवित थी, जीवन धारण किए हुए थी, शरीर सहित थी। 4/5 महीने पहले ही उसका चोला तैयार होने लगता है, उसके कर्म–संस्कारों के अनुसार। जैसे–2 उसके कर्म के संस्कार होते हैं वैसा–2 उसका वायुमण्डल बनता है, उस वायुमण्डल–वायब्रेशन के आधार पर उस आत्मा का चोला पहले ही तैयार हो जाता है किसी माता के गर्भ में। टाइम पूरा होता है, मनुष्य शरीर छोड़ता है और अपने गर्भ में प्रवेश कर जाता है। फिर 4/5 महीने और लगते हैं। 9 महीने के बाद जन्म होता है। वो इस स्थूल दुनियाँ की स्थूल बात है। भगवान बाप भी इस सृष्टि पर आते हैं तो बेहद का जन्म देते हैं। वो माता के पेट में होता है हद का जन्म और भगवान बाप आते हैं तो आत्मा रूपी बच्चों को देते हैं बेहद का जन्म। हद का जन्म लेने वालों को भी 9 महीने पेट में पकना पड़ता है। ये बेहद का जन्म लेने वालों को भी 9 दिन ज्ञान–योग की भट्ठी में पकना पड़ता है। एक दिन आना और एक दिन जाना और बाकी 7 दिन ज्ञान–योग की भट्ठी में पकना। जैसे गर्भ में से आत्मा बाहर नहीं निकल सकती, गर्भ में ही उसको खाना–पीना सब कुछ मिलता है। कोई बाहर की दुनियाँ की जानकारी नहीं। ऐसे ही भगवान बाप भी जब आते हैं तो अपने उन नौ लाख आत्मा रूपी सितारों को भट्ठी में पकाते हैं। ये ज्ञान गर्भ की, जैसे कि 9 महीना बराबर 9 दिन की भट्ठी है। आत्मा पकती है और परिपक्व हो करके जब बाहर निकलती है तो बाप का बच्चा कही जाती है। लौकिक दुनियाँ में भी आत्मा प्रवेश करती है तो बाप का बच्चा कही जाती है या 9 महीने के बाद जन्म लेती है तो बाप का बच्चा कही जाती है? (किसी ने कहा– जन्म लेते ही.. .) जब जन्म लेती है तो बाप का बच्चा कही जाती है। ऐसे ही यहाँ भी। कोई कहे– हम तो बहुत पहले से ज्ञान सुनते थे। ज्ञान सुनना अलग बात, ज्ञान को समझना भी अलग बात; लेकिन पक्का निश्चय धारण कर लेना कि यही हमारा बेहद का बाप है, आत्मा का बाप है। देह के बाप तो 84 जन्म धारण किए। ये हमारी आत्मा का बाप है। 84 जन्मों में तो 84 बाप अलग–2 होते हैं। हर जन्म में अलग–2 बाप हो जाते हैं। यहाँ तो 84 के चक्र का एक ही बाप है आत्मा का। वो देह के बाप होते हैं, देह को जन्म देने वाले होते हैं, देहभान बढ़ाने वाले बाप होते हैं; ये आत्माभिमानी बनाने वाला बाप है, रूहानी पढ़ाई पढ़ाने वाला बाप है, रूह बनाने वाला बाप है। इस बाप को पहचानने के लिए ये 7 दिन मुकर्रर किये हुए हैं। इसे साप्ताहिक कोर्स कहो, 7 दिन की भट्ठी कहो, 7 दिन का राजयोग शिविर कहो, जहाँ मनुष्य आत्माएँ बाहर की दुनियाँ से कट हो जाती हैं, उनको बाहर निकलने भी नहीं दिया जाता, कोई को चिट्ठी भी नहीं लिख सकते, फोन से बात भी नहीं कर सकते, एकदम अंदर ही अंदर पकना होता है। उन आत्माओं में कोई बहुत पक्की हो करके निकलती है, कोई बहुत कच्ची हो करके निकलती है, कोई मीडियम हो करके निकलती है। जैसे वो ईंटों का भट्ठा होता है तो ज़्यादातर ईंटें पक्की, परिपक्व हो करके अव्वल नंबर निकलती हैं, कुछ ईंटें द्वैम नंबर निकलती हैं, कुछ ईंटें थर्ड क्लास निकलती हैं, कुछ ऐसी होती है जो जल जाती है, काली खंजर (टेढ़ी–मेढ़ी, पत्थर की तरह कठोर) पड़ जाती हैं। यहाँ भी ऐसे हैं। जो भट्ठी करने के टाइम पर बहुत सहज–2, खुशी–2 भट्ठी पूरी कर लेते हैं, उनका जैसे 84 जन्मों का फाउण्डेशन बहुत अच्छा पड़ जाता है। जैसे कि 84 जन्मों में बहुत सुखी रहने वाली आत्माएँ हैं। कुछ ऐसी होती हैं कि 7 दिन पूरे ही नहीं कर पातीं और भाग खड़ी होती हैं। उन्हें अगर जबरदस्ती रोका भी जाए तो रोकने से भी नहीं रूकतीं। जबरियन भट्ठी में से बाहर निकल करके भाग जाती हैं। दुनियाँ में भी ऐसे होता है। कोई बच्चा गर्भ में ही मर पड़ता है, पेट काट कर बाहर निकालना पड़ता है। यहाँ भी बुद्धि रूपी पेट है। जन्म देने वाले माता–पिता भी होते हैं। कोई संदेश का बीज डालता है, ज्ञान का बीज डालता है और कोई ज्ञान की परवरिश करता है, तैयार करता है कि वो आत्मा ज्ञान गर्भ रूपी भट्ठी में जा करके पके, बाप को पहचाने और निश्चय पत्र लिखने के योग्य बने। यज्ञ के आदि में तो खून से लिख करके देते थे कि हमने बाप को पक्का–2 पहचान लिया, अब हम कभी हिलने वाले नहीं। अभी स्थूल खून से लिखने वाली बात नहीं है; यहाँ तो संकल्पों का खून है। अगर संकल्प में दृढ़ता आई है तो वो कुछ भी करने के लिए तैयार हो जावेगा, कोर्ट के स्टाम्प पेपर पर भी लिख करके देने के लिए तैयार हो जावेगा, कोर्ट एग्रीमेण्ट लिख करके देने के लिए भी तैयार हो जावेगा। एग्रीमेण्ट लिख कर दे सकता है– तन, मन, धन सब तेरा। तू मेरा ईश्वर बाप है, मैं तेरा बच्चा हूँ। जैसे चलायेंगे वैसे चलूँगा। कोई निभाते हैं, कोई नहीं निभाते हैं। ज्ञान लेना बड़ी बात नहीं है, सुनना बड़ी बात नहीं है, समझना बड़ी बात नहीं है, दूसरों को सुनाना और समझाना बड़ी बात नहीं है; बड़ी बात है– ज्ञान को अपने जीवन में धारण करना और अंत तक निभाना। निभाने वालों को नम्बर प्राप्त होते हैं। निभाने वाले माला के मणके बनते हैं। ये माला हर धर्म में घुमाई जाती है। कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसमें माला न घुमाई जाती हो। ये माला रूपी संगठन की निशानी है, जो संगठन भगवान बाप ने आ करके बनाया था। वो गुरू लोग तो ऐसे ही टाइटिल धराए लेते हैं– श्री–2 108 स्वामी सच्चिदानंद जी महाराज वगैरह–2। वो तो उनके झूठे टाइटिल हैं। अपन को जगतगुरू कहलाते हैं। वास्तव में उनको भारत में भी सब कोई नहीं मानता; जगत की तो बात ही छोड़ो! अरे, ये तो जगतगुरू भगवान का टाइटिल है। भगवान ही इस सृष्टि पर जब आता है तो राम–कृष्ण की आत्माओं के द्वारा सारी सृष्टि का जगतगुरू बनता है। सारी सृष्टि उसको आगे–पीछे सर झुकाती है। दुनियाँ की ऐसी कोई भी मनुष्य आत्मा नहीं है, जब लास्ट में दुनियाँ का विनाश होगा, तो गॉड फादर को न मानेगी। नास्तिक से नास्तिक भी क्यों न हो,

उसके मुख से भी निकलेगा– ओ गॉड फादर! मेरी रक्षा करो। वो बेहद का फादर है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरूनानक– ये महान धर्मपितायें तो हैं; लेकिन बेहद के बाप नहीं हैं। क्राइस्ट को फॉलो करने वाले सौ–डेढ़ सौ करोड़ से भी ऊपर हैं दुनियाँ में। वो भी बेहद का बाप नहीं है। बेहद का बाप उसे कहा जाता है, जिसकी कोई हद न हो। सारी मनुष्य सृष्टि उसको मानने के लिए तैयार हो जाये, बाध्य हो जाये। वो धर्मपितायें– इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि भी उस गॉड फादर को मानते हैं। कोई भी धर्मपिता ने अपने को भगवान नहीं कहा है। क्राइस्ट भी कहता था– मैं गॉड फादर का बच्चा हूँ। गुरूनानक ने भी ऊपर को उँगली उठाई है– एक ¬ कार सद्गुरू अकालमूर्त माना वो भी अपन को सद्गुरू नहीं कहते थे। उनके फॉलोअर्स ने उनको सद्गुरू कहना शुरू कर दिया। संन्यासियों के आदि गुरू शंकराचार्य, वो नारा लगाते हैं– शिवोऽहम्, ब्रह्मास्मि। वो उनका झूठा नारा साबित हो जाता है। अरे, शिव नाम तो कल्याणकारी का है। जो सारी सृष्टि का कल्याण करता है वो है शिव। उससे कोई ऐसा कार्य होता ही नहीं कि कोई का अकल्याण हो जाये। बोलेगा सो कल्याणकारी। इसलिए सिक्ख लोग कहते हैं– जो बोले सो निहाल। कोई ऐसा वाक्य उसके मुख से निकल नहीं सकता जो कोई का अकल्याण करे। जहाँ देखेगा, कल्याण की दृष्टि से ही देखेगा। कोई के प्रति उसकी अकल्याण की दृष्टि हो नहीं सकती। जिन्हें भी स्पर्श करेगा उनके प्रति उनकी कोई विकारी भावना नहीं हो सकती, विकृत भावना हो ही नहीं सकती। वो निराकारी है। निराकारी सो निर्विकारी और निरहंकारी होता है। जो देह–अभिमानी होते हैं, वो विकारी होते हैं, देह–अहंकार वाले होते हैं। भगवान बाप सदैव ही निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी हैं। उसका हर कर्म निर्विकारी है, हर कर्मेन्द्रियाँ निर्विकारी हैं। संन्यासियों ने अपने ऊपर टाइटिल रखाय लिया– शिवोऽहम्। खुद का भी कल्याण नहीं कर सके और अपने फॉलोअर्स का भी कल्याण नहीं कर सकते। सारी सृष्टि नीचे गिरती चली जाती है। भगवान बाप तो आ करके इस सृष्टि को ऊँचा उठाते हैं। नम्बरवार आत्माओं को ज्ञान दे करके पहले उनकी बुद्धि को सुधारते हैं। बुद्धि में ज्ञान बैठता है, ज्ञान से सद्गति होती है। वो भगवान तो ज्योतिबिंदु है। उसको तो अपना हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान नहीं है, निराकारी देश से आने वाला है, निराकारी देश को वापस जाता है। कोई धन–संपत्ति ले करके तो आता नहीं है और कोई की धन–संपत्ति ले करके वापस भी नहीं जाता है। वो क्या आकर देता है? उसके पास कौन–सी ऐसी प्रॉपर्टी है जो प्रॉपर्टी दूसरों के पास नहीं है, कोई मनुष्य गुरू के पास नहीं है, मनुष्य मात्र के पास नहीं है? वो कौन–सी प्रॉपर्टी है जो वो आ करके देता है, जिससे सारी सृष्टि का कल्याण होता है? क्या देता है? ज्ञान देता है। सीधी शांति नहीं देता, सीधा सुख नहीं देता; वो ज्ञान देता है। ज्ञान माना जानकारी। काहे की जानकारी? सच्चाई की जानकारी। वो गॉड फादर, ट्रुथ गॉड फादर कहा जाता है, सत्य को ही ट्रुथ कहा जाता है, गॉड इज़ ट्रुथ कहा जाता है, इस सृष्टि पर आ करके सच्चाई बताता है। सच्चाई का ज्ञान किसी को नहीं है। सत्य बाप की पहचान किसी को नहीं है। वो सच्चाई का ज्ञान देता है। जिन्हों–2 ने उस सच्चाई को धारण किया वो सत्य बाप के नज़दीकी कही जाती हैं। पहले–2 नज़दीकी दो आत्माएँ बनती हैं। कौन? राम और कृष्ण, फिर उनकी सहयोगिनी शक्तियाँ। राम की सहयोगी शक्ति सीता, कृष्ण की सहयोगी शक्ति राधा। ये चार आत्माओं का स्वभाव–संस्कार मिल करके एक हो जाता है। यही विशेष चार आत्माएँ हैं कि भगवान बाप जब आ करके ज्ञान की पढ़ाई पढ़ाते हैं तो उस ज्ञान को धारण करके, अपने जीवन में सबसे पहले सफलता प्राप्त करती है, वो ये चार आत्माएँ हैं, जिनके स्वभाव–संस्कार मिल करके एक हो जाते हैं; इसलिए एक मनुष्य कहा जाता है– विष्णु। चार भुजायें दिखाई जाती हैं। भुजा माने भगवान के कार्य में सौ परसेण्ट मददगार। इतना मददगार दुनियाँ की ओर कोई आत्माएँ नहीं बन सकतीं। भुजा माना हेल्पर। ये जो भक्तिमार्ग में चित्र बनाये गये हैं, दो–ढाई हज़ार साल पहले बनाये गये थे। अजंता, एलोरा, एलिफेण्टा, कनेरी आदि गुफाओं में ये भित्ति चित्र तैयार किये गये थे ढाई हज़ार साल पहले। उस समय सृष्टि का इतना पतन नहीं हुआ था, मनुष्य की बुद्धि का भी इतना पतन नहीं हुआ था; इसलिए चित्रों में चित्रकारों ने जो चित्रण किया उनमें भी सच्चाई थी। बाद में उन चित्रों को देख करके मनुष्यों ने शास्त्र बनाये और शास्त्र भी पहले–2 बुद्धि में थे। शुरुआत में कागज़ में नहीं लिखे गये। बहुत वर्षों के बाद फिर कागज़ में लिखे गये– जिसे भोजपत्र कहा जाता था। पेड़ की छाल निकलती थी उस पर लिखे जाते थे। उन शास्त्रों का बाद में फिर इण्टरप्रिटेशन हुआ, व्याख्या हुई। शुरुआत में वो व्याख्या भी सच्ची थी। बाद में जैसे–2 मनुष्य देह–अभिमानी बनता गया, अपन को और दूसरों को देह के रूप में देखता गया, त्यों–2 मनुष्यों की बुद्धि मिट्टी बनती गई। देह–अभिमानी बुद्धि शास्त्रों की व्याख्या को विकृत करने लगी। अनेकों ने अनेक प्रकार की शास्त्रों की व्याख्यायें कर दीं। एक ही गीता, उसकी 108 से ज़्यादा टीकाएँ निकली हुई पड़ी हैं। टैगोर गीता कुछ अलग कहती है, माधवाचार्य की गीता कुछ अलग बात कहती है, शंकराचार्य की गीता कुछ अलग बात कहती। सब टीकायें एक–दूसरे से टकराने वाली हैं। शंकराचार्य की गीता कहती है– एकौ ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, एक ही आत्मा है, उसी के अलग–2 रूप है। माधवाचार्य की गीता कहती है– आत्माएँ अनेक हैं, सब अविनाशी हैं; परमात्मा अलग है। तो देखो, कितना भेद पैदा होता जाता है! जितना–2 द्वैतवाद बढ़ता जाता है उतना–2 दुनियाँ नीचे गिरती चली जाती है। अनेक बातें तो झूठी ही झूठी होंगी। भगवान बाप आ करके एक बात बताते हैं, एक सच्चाई। वो सच्चाई क्या है? मूल रूप में कहो तो मैं आत्मा ज्योतिबिंदु और मेरा एक बाप भी ज्योतिबिंदु, इस दुनियाँ में दूसरा कोई नहीं, सब धोखेबाज हैं। अगर इतना सार में ज्ञान धारण कर लिया तो ज़्यादा विस्तार में भी जाने की दरकार नहीं। कितनी सहज बात है! सहज को मुश्किल मनुष्य गुरू करते हैं और मुश्किल को सहज भगवान बाप बनाता है। ओमशांति।